ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

# अनाथ व सामान्य किशोरों की निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

# Comparative Study of Orphans and Ordinary Adolescents

Paper Submission: 16/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

**राजीव कुमार सिह**
सहायक प्राध्यापक,
कला विभाग,
एस.एस.डी.सी.,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**

अध्ययन करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कानपुर नगर के किशोरों व देहात के किशोरों व अनाथ किशोरों में बहुत सी सामान्यतः पाई गयी हैं तथा शहर की अपेक्षा देहात में सुविधायें नहीं थी किन्तु शहर में कई अनाथालय में अनाथ किशोरों की शिक्षा, सुरक्षा तथा उनमे सामान्य की स्थिति पाई गयी किन्तु देहात में ऐसी सुविधया नहीं इस प्रकार शोधकर्ता ने सामान्य को ध्यान में रखकर अनुसंधान कार्य किया।

After studying, it is concluded that in Kanpur city teenagers and rural teenagers and orphans are more common and did not have facilities in the countryside than in the city, but many orphanages in the city have education, safety and Normal condition was found in them, but there is no such facility in the countryside, thus the researcher did research work keeping the general in mind.

**मुख्य शब्द :** सामान्य किशोरों की निष्पत्ति, व्यक्तित्व विकास, अनाथ ।
Generic Teenage Playfulness, Personality Development, Orphans.

**प्रस्तावना**

विश्व में मानव एक ऐसा प्राणी है जिसको पूर्ण रूप से चेतन पूर्ण माना गया है। चेतन से तात्पर्य है, कि मनुष्य प्रकृति की अन्य वस्तुओं की भांति अज्ञानी है। उसे बोलने समझने की भाषा है। किशोर अपनी चिंतन शक्ति के द्वारा अपनी इच्छा रूचि के अनुसार अपने आप का पूर्ण विकास करते हैं तथा किशोरों ने अपने ज्ञान तत्व के माध्यम से ईश्वर का प्राप्त कर लिया है। चूंकि मानव समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। जिसका तात्पर्य प्रत्येक किशोर अपने विकास के मार्ग पर अग्रसर है। इस प्रकार कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर शिक्षा को अन्तिम सत्य की खोज का साधन माना है। शिक्षा का तात्पर्य मानव मस्तिष्क को इस योग्य बनाना है कि वह अन्तिम सत्य की खोज कर सके। अनेक अर्थ शास्त्रियों ने लिखा है कि स्लेट पर जैसी लकीर खीचोंगे वैसी लकीर बन जायेगी। बालक जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उनके व्यक्तित्व विकास के प्रति उत्तरदायी होता है। यद्यति माता–पिता अपने बालकों को चाहे जितना कम समय दे पाते हों, बालकों के उत्तम विकास की प्रकिया से अनिभिज्ञ हों फिर भी बालक के व्यक्तित्व के विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि पर अपने प्रभाव से इन्कार नहीं किया जा सकता।

**परिभाषा**

किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें मनुष्य बाल्या वस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ता है। (सर शील्ड के अनुसार )।

किशोरावस्था में किशोरों में होने वाले शारीरिक व मानसिक परिवर्तन एकाएक कूद कर आ जाते हैं। (स्टेनले)।

माता–पिता से हीन किशोरों के लिए समाज के कुछ लोगों के हृदय में दया तो उत्पन्न होती है परन्तु यह करूणा क्षीणक तथा औपचारिक होती है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

भारतीय गणतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता तथा योग्यता को विकसित करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। किशोरों को जो सुविधायें अपने माता–पिता के साथ रहते प्राप्त होते हैं। वे सुविधायें अनाथ किशोरों के लिए दुर्लभ हैं। ऐसी स्थिति में यह परम आवश्यक है। कि अनाथ किशोरों के विकास

हेतु आवश्यक सुविधाओं के लिए अनाथ किशोरों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं एवं सनाथ किशोरों की विशेषताओं को समझा जाये। इसी कारण शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

**अध्ययन की परिकल्पना**

कानपुर नगर के किशोरों व अनाथ किशोरों तथा कानपुर देहात के किशोरों व अनाथ किशोरों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कानपुर नगर के सामान्य किशोर व कानपुर देहात के अनाथ किशोरों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

कानपुर नगर किशोर एवं कानपुर देहात के अनाथ किशोरों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**प्रस्तुत शोध समस्या**

सामान्य व अनाथ किशोरों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का एक तुलनात्मक अध्ययन करने से पूर्व उनके चरित्र व व्यक्तित्व में व अधिगम की जीवन में क्या आवष्यकता है।

**समस्या का परिसीमन**

किसी भी कार्य करने के पहले उसे सीमा बद्ध कर लेना चाहिए अर्थात् जो कार्य किया जा रहा है, उसकी लम्बाई क्या है व चौड़ाई क्या है जान लेना चाहिए अर्थात् लम्बाई–चौड़ाई का तात्पर्य विस्तार से किया जाये। यदि किया जाने वाला कार्य अधिक विस्तार में है तो उसके करने में श्रम व धन अधिक दुरूपयोग होगा।

अतः शोधकर्ता ने कानपुर नगर व कानपुर देहात को चुना है।

**न्यादर्श**

प्रस्तुत शोधकर्ता ने 400 का न्यादर्श लिया है। अनुसंधान कर्ता ने अपने अनुसंधान हेतु कुल 400 का न्यादर्श लेगा, जो कानपुर नगर के 200 व कानपुर देहात के 200 किशोर हैं।

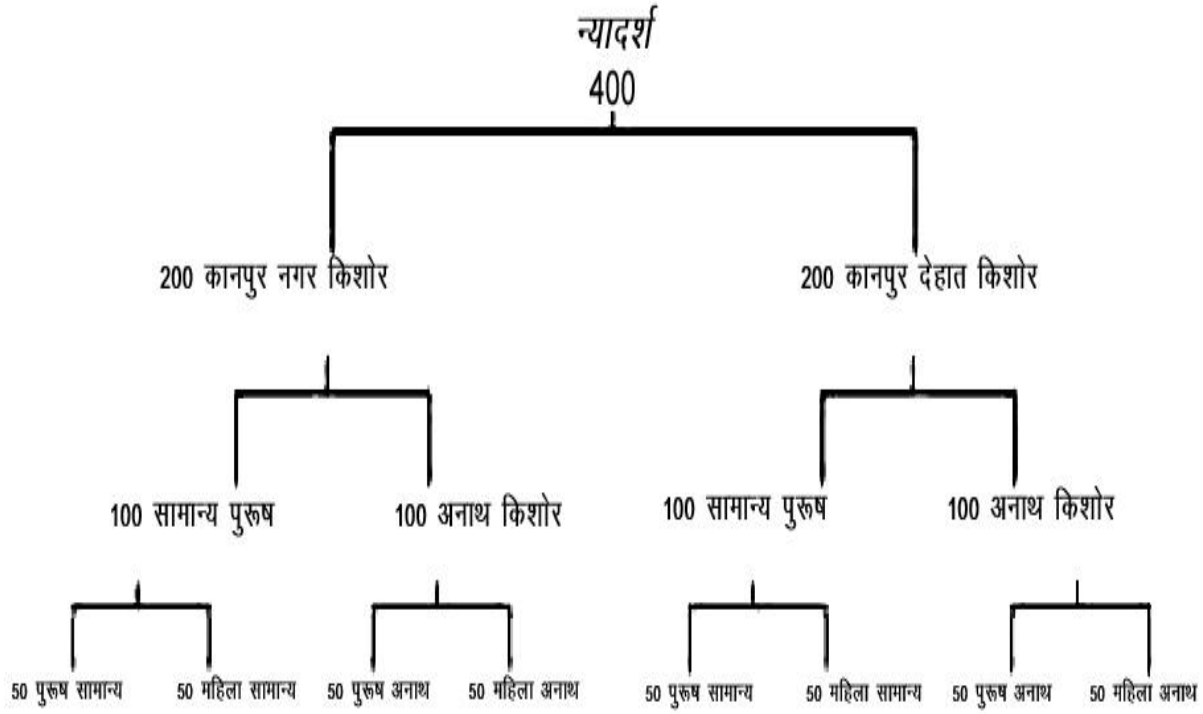


**उपकरण**

शोधकर्ता ने किशोरों व अनाथ किशोरों की निष्पत्ति को मापने के लिए डा0 गोविन्द्र तिवारी व डा0 एच0एम0 द्वारा निर्मित निष्पत्ति का प्रयोग किया है।

**प्राप्त आंकड़ो की सांख्यिकी करना**

शोधकर्ता ने आंकड़ों को जानने के लिए समान्तर माध्य, मानक विचलन व क्रान्तिक निष्पत्ति के साथ टी0 टेस्ट का प्रयोग किया है।

तालिका (1)

**कानपुर नगर के सामान्य किशोर व सामान्य अनाथ किशोर तथा कानपुर देहात के सामान्य किशोर एवं अनाथ किशोर**

| Category of Kishor | Mean | Standard Diviation | Standard Error of difference |
|---|---|---|---|
| कानपुर नगर के किशोर व अनाथ किशोर | 25.5 | 0.7141 | 0.0606 |
| कानपुर देहात के सामान्य व अनाथ किशोर | 24 | 0.9798 | |

कानपुर नगर के किशोरों व अनाथ किशोरों व कानपुर देहात के सामान्य व अनाथ किशोरों निष्पत्ति को तालिका (1) से दर्शाया गया है। जो कानपुर नगर के किशोर व अनाथ किशोरों का मध्यमान 25.5 तथा कानपुर देहात के किशोर व अनाथ किशोर मध्यमान 24 है तथा कानपुर नगर के मानक विचलन 0.714 तथा कानपुर देहात के मानक विचलन 0.979 है।

तालिका (2)
कानपुर नगर के किशोर व अनाथ किशोर तथा कानपुर देहात के सामान्य किशोर व अनाथ किशोरों का प्रसरण विश्लेषण–

| Significant level of 145 degree of Freedom | Critical Ratio | T. Value |
|---|---|---|
| | 25 | 25 |
| .01 | Significant | |
| .05 | Significant | |

तालिका (2) में क्रान्तिक निष्पत्ति 25 है तथा T Value भी 25 है ।

अतः .01 तथा .05 स्तर पर दोनों समूहों में अन्तर स्पष्ट दिखाई दे रहा है, क्यों दोनों स्तर पर क्रान्तिक निष्पत्ति महत्वपूर्ण है।

अतः कानपुर नगर के सामान्य किशोर तथा अनाथ किशोर तथा कानपुर देहात के किशोर तथा अनाथ किशोरों में पर्याप्त अन्तर पाया गया है।

**निष्कर्ष**

1. सामान्य किशोरों तथा अनाथ किशोरों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति पर अनुसंधान किया जा सकता है।
2. कानपुर नगर व कानपुर देहात के आसपास रहने वाले सामान्य किशोर व अनाथ किशोरों की निष्पत्ति के बारे में अध्ययन किया जा सकता है।
3. कानपुर देहात के अनाथ किशोरों की देखरेख के बारे में अध्ययन करके उनकी सुविधाओं में चर्चा किया जा सकता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *Saxena, Radha Rani, Education for Effective Leadership, ETC-Journal, Vol. 2(2), May-August, 2003, p. 13-21.*
2. *Saxena, B.D., Role of Institution Heads, Institutional Autonomy and Ideal University System, University News, Vol. 41(27), July 7-13, 2003, p. 1-4.*
3. *Sneha, Joshi and Archana Tomar; Leadership in Women, University News. Vol. 41(09), March 3-9, 2003, p.2-4.*
4. *Singh, M.M.H. (1978). A Study of Leadership Behaviour of Secondary schools in Haryana and Its Correlates, Ph.D., Edu., KU, Kurukshetra.*
5. *Sharma, R.C.(1968) Theory in Educational Administration, NCERT, New Delhi, Deptt. Of Educational Administration.*
6. *Styles and Theories of Leadership; B. Ramadevi : Employmment News, New Delhi, Jan. 30th to 5th Feb., 1999.*
7. *Sharma, R.S.(2005) issues in Educational Administration, Jaipur, ABD Publishers, p. 295.*